Mahendra's

UP Police कांस्टेबल / UP लेखपाल

HINDI

हिन्दी व्याकरण – शब्द भेद

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों सहित

भाग 3

3:00 PM

LIVE

Mahendra's

शब्द भेद - इन्हें चार भागों में विभाजित किया गया है-

1.उत्पत्ति/उद्गम के आधार पर -
(i) तत्सम(ii) तद्भव (iii) देशज(iv) विदेशी (v) संकर

2. रचना /बनावट के आधार पर -
(i) रूढ़ शब्द (ii) यौगिक शब्द (iii) योगरूढ़ शब्द

3.अर्थ के आधार पर –
(i)समानार्थी शब्द (ii) विपरीतार्थी शब्द (iii) एकार्थी (iv) अनेकार्थी

4.व्याकरण या प्रयोग के आधार पर-
(i)विकारी शब्द (ii)अविकारी शब्द

Mahendra's

विकारी / अविकारी शब्द

जब भाषा में शब्दों का प्रयोग होता है तब व्याकरणिक दृष्टि से उन्हें संज्ञा, सर्वनाम आदि रूप में समझा जाता है, इसी आधार पर शब्दों को दो भागों में बाँटा गया है

1. विकारी शब्द–

जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण विकार अर्थात् परिवर्तन आ जाता है वे शब्द विकारी शब्द कहलाते हैं। इनमें **संज्ञा,सर्वनाम,विशेषण,क्रिया** आते हैं

जैसे -

- लड़का खेल रहा है—लड़की खेल रही है। (लिंग परिवर्तन)
- लड़का पढ़ रहा है—लड़के पढ़ रहे हैं। (वचन परिवर्तन)

2.अविकारी शब्द–

वे शब्द जिनका प्रयोग मूल रूप में होता है तथा लिंग, वचन व कारक के आधार पर उसमें किसी तरह का परिवर्तन नहीं होता अर्थात् जो शब्द हमेशा एक-से रहते हैं, वे अविकारी शब्द कहलाते हैं।

जैसे- **संबंधबोध,समुच्चयबोध,क्रियाविशेषण,विस्मयादिबोध**

जैसे-

- आज, में, और, इत्यादि, अरे, आह, किन्तु।

6.बचपन, शैशव, मित्रता, अहंकार, स्वत्व, देवत्व ये शब्द कौन-सी संज्ञा है?

(a) भाववाचक संज्ञा

(c) समूहवाचक संज्ञा

(b) व्यक्तिवाचक संज्ञा

(d) जातिवाचक संज्ञा

4. क्रिया

जिन शब्दों से किसी कार्य का होना या करना व्यक्त होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं, जैसे- खाना, पीना, सोना, हँसना, रहना, जाना , आदि क्रियाएँ हैं।

Mahendra's

धातु -

धातु – क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। 'धातु' से ही क्रिया पद का निर्माण होता है इसलिए क्रिया के सभी रूपों में 'धातु' उपस्थित रहती है, जैसे-

- चलना क्रिया में 'चल' धातु है।
- पढ़ना, क्रिया में 'पढ़' धातु है।

प्राय: धातु में 'ना' प्रत्यय जोड़कर क्रिया का निर्माण होता है।

धातु के भेद-

व्युत्पत्ति अथवा शब्द निर्माण की दृष्टि से धातु दो प्रकार की होती है—

1. मूल धातु

2.यौगिक धातु

1. मूल धातु – यह स्वतन्त्र होती है तथा किसी अन्य शब्द पर निर्भर नहीं होती, जैसे-जा, खा, पी, रह आदि।

2. यौगिक धातु - यौगिक धातु मूल धातु में प्रत्यय लगाकर, कई धातुओं को संयुक्त करके अथवा संज्ञा और विशेषण में प्रत्यय लगाकर बनाई जाती है। यह तीन प्रकार की होती है

(i) प्रेरणार्थक क्रिया (ii) यौगिक क्रिया (iii) नाम धातु (क्रिया)

(i) प्रेरणार्थक क्रिया (धातु) –

जैसे - प्रेरणार्थक क्रियाएँ अकर्मक एवं सकर्मक दोनों क्रियाओं से बनती हैं

मूल धातु	प्रेरणार्थक धातु
करना	कराना, करवाना
पीना	पिलाना, पिलवाना
देना	दिलाना, दिलवाना
उठना	उठाना, उठवाना
सोना	सुलाना, सुलवाना

(ii) यौगिक क्रिया-

दो या दो से अधिक धातुओं के संयोग से यौगिक क्रिया बनती हैं,

जैसे—रोना-धोना, उठना-बैठना, चलना-फिरना, उठ-बैठना,
उठ- जाना।

(iii) नाम धातु –

संज्ञा या विशेषण से बनने वाली धातु को नाम धातु कहते हैं,

जैसे—गाली से गरियाना, लात से लतियाना, बात से बतियाना।

क्रिया के भेद-रचना की दृष्टि से क्रिया के दो भेद हैं

1. सकर्मक क्रिया

2. अकर्मक क्रिया

1.सकर्मक क्रिया- जो क्रिया कर्म के साथ आती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं, जैसे -

मोहन फल खाता है। (खाना क्रिया के साथ कर्म फल है)

सीता गीत गाती है। (गाना क्रिया के साथ गीत कर्म है)

2.अकर्मक क्रिया- अकर्मक क्रिया के साथ कर्म नहीं होता तथा उसका फल कर्ता पर पड़ता है, जैसे -

राधा रोती है। (कर्म का अभाव है तथा रोती है क्रिया का फल राधा पर पड़ता है।)

मोहन हँसता है। (कर्म का अभाव है तथा हँसता है क्रिया का फल मोहन पर पड़ता है।)

किया के अन्य भेद निम्नलिखित प्रकार हैं –

1. नामबोधक क्रिया - संज्ञा अथवा विशेषण के साथ क्रिया जुड़ने से नामबोधक क्रिया बनती है।
जैसे

संज्ञा + क्रिया = नामबोधक क्रिया

लाठी + मारना = लाठी मारना
रक्त + खौलना = रक्त खौलना

विशेषण + क्रिया = नामबोधक क्रिया

दुःखी + होना = दुःखी होना
पीला + पड़ना = पीला पड़ना

2.संयुक्त क्रिया-

जब कोई क्रिया दो क्रियाओं के संयोग से निर्मित होती है, तब उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं, जैसे

(i) आप आते-जाते रहिए।
(ii) बच्चों खेलते कूदते रहों
(iii) आप खाते पीते रहिये

3.सहायक क्रिया –

मुख्य क्रिया के साथ प्रयुक्त होकर जो अर्थ को स्पष्ट करती है उसे सहायक-क्रिया कहते हैं, जैसे -

- राम खाना खा रहा है। इसमें रहा है सहायक क्रिया है।
- मैं घर जाता हूँ। इस वाक्य में 'हूँ' सहायक क्रिया है।

4.पूर्वकालिक क्रिया - जब कर्ता एक क्रिया को समाप्त करने के बाद दूसरी क्रिया सम्पन्न करता है, तो पहले वाली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कही जाती है, जैसे

- राम खाना खाकर सो गया। इसमें 'खाकर' पूर्वकालिक क्रिया है, जो सोने से पहले सम्पन्न हुई है।

5.द्विकर्मक क्रिया - जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं उसे द्विकर्मक क्रिया कहा जाता है, जैसे

- अध्यापक ने छात्रों को हिन्दी पढ़ाई । (दो कर्म – छात्रों, हिन्दी)
- मोहन ने राम को थप्पड़ मार दिया। (दो कर्म – राम, थप्पड़)

वाच्य-

क्रिया के रूपान्तरण को वाच्य कहते हैं। इससे यह पता चलता है कि वाक्य में किसकी प्रधानता है-कर्ता की, कर्म की या भाव की।

- वाच्य के भेद - वाच्य की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

1. कतृवाच्य
2. कर्मवाच्य
3. भाववाच्य

1.कतृवाच्य–क्रिया के उस रूपान्तरण को कतृवाच्य कहते हैं जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध हो, जैसे–
• राम ने पानी पिया। • मैंने पुस्तक पढ़ी। • सीता जाती है।

2. कर्मवाच्य – क्रिया के उस रूपान्तरण को कर्मवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध हो, जैसे
• पुस्तक पढ़ी जाती है। • भाषण दिया जाता है। • लेख लिखा गया।

3. भाववाच्य–क्रिया का वह रूपान्तर भाववाच्य कहलाता है जिससे वाक्य में 'भाव' (या क्रिया) की प्रधानता का बोध होता है, जैसे –
(i) मुझसे चला नहीं जाता। (ii) उससे चुप नहीं रहा जाता।
iii) सीता से दूध नहीं पिया जाता।

अविकारी / अव्यय -

'अव्यय' शब्द का अर्थ है—'व्यय न होना'।

अव्यय वे शब्द हैं, जिनमें लिंग, वचन, पुरुष, काल आदि की दृष्टि से कोई तब, रूप-परिवर्तन (व्यय) नहीं होता है अर्थात् किसी भी स्थिति में अव्यय का रूप वैसे -का -वैसा ही बना रहता है,
जैसे—आज, कब, इधर, किन्तु, परन्तु, क्यों, जब, और, अतः, इसलिए आदि।

अव्यय/ अविकारी के भेद-अव्यय चार प्रकार के होते हैं—

1. क्रिया-विशेषण
2. सम्बन्ध बोधक
3. समुच्चय बोधक
4. विस्मयादि बोधक

1.क्रिया-विशेषण-

क्रिया -विशेषण वह अव्यय/अविकारी शब्द है, जो 'क्रिया की किसी विशेषता' को बताता है,
जैसे-

(i) राधे धीरे-धीरे चल रहा है। यहाँ धीरे-धीरे शब्द क्रिया 'चलने की' विशेषता बता रहा है।

(ii) सीता बिल्कुल थक गयी है। यहाँ पर 'बिल्कुल' शब्द क्रिया 'थकने की' विशेषता बता रहा है।

(iii) अधिक मत खाओ।

(iv) कम बोलो।

क्रिया-विशेषण चार प्रकार के होते हैं-

(i) स्थानवाचक
(ii) रीतिवाचक
(iii) परिमाणवाचक
(iv) कालवाचक

(i) स्थानवाचक विशेषण-

(अ) स्थितिवाचक-यहाँ, वहाँ, भीतर, बाहर।
(ब) दिशावाचक-इधर, उधर, दाएँ, बाएँ।

(ii) रीतिवाचक विशेषण -

ऐसे, वैसे, कैसे, धीरे, अचानक, कदाचित्, अवश्य, इसलिए, तक, सा, तो हाँ, जी, यथासम्भव।

(iii) परिमाणवाचक विशेषण-

(अ) अधिकताबोधक- बहुत, खूब, अत्यन्त, अति।
(ब) न्यूनताबोधक-जरा, थोड़ा, किंचित्, कुछ।
(स) पर्याप्तिबोधक-बस, यथेष्ट, काफी, ठीक।
(द) तुलनाबोधक-कम, अधिक, इतना, उतना।
(य) श्रेणिबोधक-बारी-बारी, तिल-तिल, थोड़ा-थोड़ा।

(iv) कालवाचक विशेषण -

(अ) समयवाचक- -आज, कल, अभी, तुरन्त।
(ब) अवधिवाचक - रात भर, दिन भर, आजकल, नित्य।
(स) बारम्बारतावाचक- हर बार, कई बार, प्रतिदिन।

(2)संबंधबोधक शब्द -

जो शब्द वाक्य के विभिन्न पदों में परस्पर शब्द व्यक्त करें, वे संबंधबोधक शब्द कहलाते हैं।

(का,के,की, ना,ने,नी रा,रे,री सा,से,सी, आदि।)

पद

जो शब्द वाक्य में प्रयोग हो, वे पद कहलाते हैं। पद स्वतंत्र नहीं होते, जैसे-कमल ने खाना खाया। इस वाक्य में आए सभी शब्द 'पद' कहलाएंगे।

3.समुच्चयबोधक शब्द-

जो शब्द दो या उससे अधिक वाक्यों या वाक्यांशों को जोड़ने का कार्य करे, वे समुच्चयबोधक शब्द कहलाते हैं, जैसे-परंतु, यदि, अथवा, नहीं तो, लेकिन फिर भी, क्योंकि, इसलिए, और, या, अन्यथा, किंतु आदि।
वह गरीब है परंतु ईमानदार है।

4.विस्मयादिबोधक शब्द –

जो शब्द हर्ष, क्रोध, पीड़ा, दुख, आश्चर्य, भय आदि मनोभावों को व्यक्त करने के लिए प्रयोग किए जाते है, वे विस्मयादिबोधक शब्द कहलाते हैं, जैसे-वाह! कितना सुंदर दृश्य है।

वाह! ओह! हाय! छिह! आह! अहा!

निपात शब्द-

मूलत: निपात का प्रयोग अव्ययों के लिए होता है। इनका कोई लिंग, वचन नहीं होता।
निपात सहायक शब्द होते हुए भी वाक्य के अंग नहीं होते।

ये शब्द वाक्य में बलाघात के लिए प्रयोग किए जाते हैं
जैसे- मैं भी जाऊँगा। मैं ही क्यों जाऊँ? (ही, भी,)

निपात के कार्य-

1. प्रश्न करने में प्रयोग।
2. किसी शब्द पर बल देने के लिए प्रयोग।
3. अस्वीकृति प्रकट करने में प्रयोग।
4. विस्मय प्रकट करने के लिए प्रयोग।

निपात के भेद-इसके मुख्यतः नौ (9) भेद हैं

1. प्रश्नबोधक निपात- क्या, आदि।
2. विस्मयादिबोधक निपात-काश! क्या, कि आदि। काश,
3. सकारात्मक निपात- हाँ, जी आदि।
4. नकारात्मक निपात-नहीं, जी नहीं आदि।
5. निषेधात्मक निपात - मत, खबरदार आदि।
6. अवधारणबोधक निपात-ठीक, करीब, तकरीबन, लगभग आदि।
7. आदरबोधक निपात-जी आदि।
8. बलप्रदायक निपात-ही, केवल, तक, पर, सिर्फ आदि।
9. तलनाबोधक निपात-सा आदि।

1.अरे ! जरा इधर तो आ! वाक्य में कौन-सा अव्यय है?

(a) परिमाणवाचक
(b) प्रश्नवाचक
(c) विस्मयादिबोधक
(d) कालवाचक

2.निम्नलिखित प्रश्नमें क्रियाविशेषण का वाक्य कौन-सा है?

(a) धोबी कपड़े साफ धोता है।
(b) वह धीरे-धीरे पढ़ता है।
(c) a व b दोनों ।
(d) कोई नहीं।

3.'बुढ़ापा' शब्द किस प्रकार की संज्ञा है?

(a)जातिवाचक
(b) भाववाचक
(c) व्यक्तिवाचक
(d) इनमें से कोई नहीं

4.'प्रिय' विशेषण के साथ प्रयुक्त होने वाली संज्ञा नहीं है

(a) विषय
(b) कवि
(c) मित्र
(d) बैरी

(5) 'भी' शब्द हैं
(a) क्रिया
(b) निपात
(c)क्रियाविशेषण
(d) विशेषण

(6) "इस सवाल का जवाब तो कोई भी शिक्षक दे सकता है।' वाक्य में आए 'भी', 'तो' शब्द है

(a) सर्वनाम
(b) निपात
(c) संबंधबोधक
(d) क्रियाविशेषण

(7) रिक्त स्थान के लिए सही विकल्प के क्रमांक पर निशान लगाइए। "तुम कुछ खा नहीं रहे, मै ही खाए जा रहा हूँ।'

(a) ही
(b) तो
(c) भी
(d) अधिक

(8)वह धीरे-धीरे जा रहा है। वाक्य में रेखांकित पद है:

(a)सर्वनाम
(b) विशेषण
(c) क्रियाविशेषण
(d) अधिक

(9)एक पद, वाक्यांश या उपवाक्य का संबंध दूसरे पद, वाक्यांश या उपवाक्य से जोड़ने वाले अव्यय को कहते हैं:
(a) समुच्चयबोधक अव्यय
(b) विस्मयादिबोधक अव्यय
(c) क्रियाविशेषण
(d)अप्रकट अव्यय

(10)वह गलत होने से डरती है।' में उचित क्रियाविशेषण शब्द आएगा।
(a) तेज
(b) अचानक बहुत
(c)धीरे-धीरे
(d)बहुत

उत्तरमाला-

प्रश्न	उत्तर
1	(c) विस्मयादिबोधक
2	(c) a व b दोनों
3	(b) भाववाचक
4	(d) बैरी
5	(b) निपात
6	(b) निपात
7	(a) ही
8	(c) क्रियाविशेषण
9	(a) समुच्चयबोधक अव्यय
10	(d)बहुत

धन्यवाद....